[श्री राम अवधेश सिंह]

इस सदन को भी सूचना दी उस समय 75 लोगों के नाम गिनाए गए जो कि भूख से मर गए हैं । इसके बावजूद सरकार अपनी जिम्मेदारी नहीं समझती है । बेरोजगारी खत्म करने के लिए सरकार एक ओर कहती है कि हम कारखाने खड़े कर रहे हैं, लेकिन वहां कारखाना चालू है और सारे मुनाफा कमाने वाले कारखाने हैं, इसके बावजूद सरकार उन कारखानों को नहीं चलाती है । वह सरकार तो उनको चलवाने में अक्षम है । मैं चाहता हूं कि जितने कर के पैसे उस पर, बाकी हैं, महोदय, आपको यह जान कर आश्चर्य होगा कि उस मुनाफा कमाने वाले कारखाने ने बिजली का बिल उस साहू जैन ने सात करोड़ रुपये रखा और सेल्ज टैक्स का 5 करोड़ से ज्यादा उस पर बकाया है और उसने वह सारा पैसा लेकर देश के दूसरे हिस्सों में उसने कारखाने खड़े किए हैं । यह महोदय,... (समय की घंटी)

...दो मिनिट में मैं कह दूंगा ।

12 Noon

MR. CHAIRMAN: No two minutes. Only half-a-minute.

श्री राम अवधेश सिंह : महोदय, मैं यह कहना चाहता हूं कि यह सरकार कम से कम आगे आए और जितना पैसा उस पर बकाया है वह कड़ाई से वसूल करे और हम लोगों को आश्वासन दे इसे टेकओवर करने के लिए क्योंकि बिना सरकार के राष्ट्रीयकरण के यह मामला हल हो नहीं सकता । दुबारा कारखाना बनाने के लिए और जितने लोगों को रोजगार मिला हुआ है, उनके लिए सरकार दूसरी जगह अगर कारखाना खड़ा करेगी तो एक हजार करोड़ रुपया से कम नहीं लगेगा । लेकिन अगर सरकार 50 करोड़ रुपया खर्च करके और राष्ट्रीयकरण करे तो हम समझते हैं कि यह खूब बढ़िया ढंग से चलेगा । साथ ही जो उनपर बकाया है बिजली का, सेलसटैक्स का, वह भी वसूल करे । महोदय, यह बात सभी जानते हैं कि रामकृष्ण डालमियां थे, जिन्होंने तमाम करों की चोरी की थी तो उनको जेल में रखा गया था । उसी प्रकार यह साहू जैन और अशोक जैन को भी जेल में बन्द करिए तथा इनसे बकाया वसूल करिए तभी जाकर यह मामला बन सकता है । धन्यवाद ।

MR. CHAIRMAN: Mr. Satya Pal Malik.

श्री कैलाश पति मिश्र (बिहार) : सभापति महोदय... (व्यवधान)

MR. CHAIRMAN: No one else. Please sit down.

श्री राम अवधेश सिंह : सरकार को स्पष्ट व्यान देना चाहिए कि सरकार क्या करना चाहती है, क्या करेगी क्योंकि यह बहुत महत्वपूर्ण प्रश्न है । सरकार से कुछ कहलवाइए ।

MR. CHAIRMAN: You know the rules or not. The rules are that you can make a special mention and the Government will try to reply.

REFERENCE TO THE HEAVY LOSS OF LIFE AND PROPERTY DUE TO FOODS IN UTTAR PRADESH

श्री सत्यपाल मलिक (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्,... (व्यवधान)...

श्री सत्य प्रकाश मालवीय (उत्तर प्रदेश) : सर, पाइंट आफ आर्डर, मेरा व्यवस्था का प्रश्न है ।

MR. CHAIRMAN: Yes, Mr. Point of Order.

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : मेरा पाइंट आफ आर्डर यह है महोदय, कि आपके नियम कहते हैं कि जब कोई सदस्य यहां स्पेशल-मेंशन का प्रश्न उठाए तो 15 दिन से लेकर एक महीने के अंदर सरकार को जवाब देना चाहिए । मैं और सदस्यों के बारे में तो नहीं जानता लेकिन मेरे अपने का बारह-बारह महीने से जवाब नहीं आ रहा है । आप इस बारे में सरकार से सख्ती करिए और पार्लियामेंटरी अफेयर्स मिनिस्टर भी यहां हैं... (व्यवधान)...

MR. CHAIRMAN: You bring it to my notice.

SHRI SATYA PRAKASH MALAVIYA: I have already brought it to your notice.

MR. CHAIRMAN: Now I will forward it.

SHRI RAM AWADESH SINGH (Bihar): I am on a point of order.

MR. CHAIRMAN: Nothing will go on record.

श्री सत्यपाल मलिक : श्रीमन् उत्तर प्रदेश के 57 में से 38 जिलों में इस वक्त बाढ़ है और सबसे ज्यादा नुकसान जो गंगा के आसपास के इलाके हैं, उसमें हर साल होता है और यह बातें उठ जाती हैं । मैं आज इस सदन का बहुमूल्य समय इसलिए लेना चाहता हू कि इस बार का सबसे ज्यादा नुकसान हमारे जिले में हुआ है । देखने में लग सकता है कि मैं कोई बहुत स्थानीय बात उठा रहा हूं । ऐसी बात नहीं है, यह जितना अब नुकसान हो रहा है, आने वाले वर्षों में और ज्यादा होगा अगर केन्द्र सरकार के दो विभाग, जिनका ताल्लुक इस समस्या से है, कार्यवाही नहीं करेंगे तो । जो सबसे ज्यादा नुकसान इस बार हमारे जिले में हुआ, उसकी वजह यह थी कि गंगा में जब ऊपर से पानी आता है तो गंगा के हेडवर्क से ज्यादा पानी छोड़ दिया गया । गंगा को वैसे तो पवित्र मानते ही हैं, लेकिन हमारे इलाकों में अविश्वसनीय नदी है, चूंकि बराबर गंगा का पार्ट बदलता रहता है, पानी एकदम छोड़ देने से बहुत जबरदस्त नुकसान करीब दो हजार गांवों में हो गया । यह नौबत श्रीमन्, इसलिए आई है, करीब आज से 13 साल पहले टिहरी में एक बांध बनाने की योजना उत्तर प्रदेश सरकार ने बनाई थी, मगर वह बांध आज तक नहीं बन पाया । अगर बन गया होता तो गंगा का पानी रेगुलेट हो करता था सही तरीके से । उसी के साथ-साथ यहां जो पुरानी गंग नहर है, जो अंग्रेजों ने बनाई थी, उस नहर के तमाम किनारे, नहर की झील, उसके पुल, उसके बान्ध सारे पुराने हो चुके हैं, आउट-डेटेड हो गए हैं, कमजोर हो गये हैं । तो यह परपोजल था कि उसके पेरेलल एक और नहर बनाई जाय जो बाकी पानी को बरसात के दिनों में ले जा सके ।

श्रीमन्, आपको यह सुनकर हैरत होगी कि उत्तर प्रदेश का सारा रुपया जो रेवेन्यू का है, वह सारा सरकारी नौकरों की तनख्वाह पर खर्च हो जाता है । जब योजना बनी तो उस समय एक बड़े गतिशील और प्रगतिशील कहे जाने वाले मुख्यमंत्री वहां थे । उन्होंने योजना बनाई और उसके बाद सत्ता से चले गए और फिर उन्होंने आन्दोलन कर दिया टिहरी से लेकर... (**व्यवधान**)...

श्री सत्य प्रकाश मालवीय : उस समय आप विधायक थे ।

श्री सत्यपाल मलिक: जी हां, मैं विधायक था और शायद आप भी थे । उस योजना को बने आज 13 साल हो गए हैं, न वह टिहरी का बांध बना रहा है और न ही नहर निकल रही है । मैं एक और दिलचस्प बात की आपको जानकारी देना चाहता हूं इस नहर को निकालने के लिए और टेहरी डेम के लिए उत्तर प्रदेश सरकार के पास रुपया नहीं था तो वर्ल्ड बैंक ने रुपया दिया । लेकिन रुपया देने के बाद दिक्कत यह हो गई कि जो नई नहर निकालनी थी उसके आस-पास पांच हजार पेड़ लगे हुए हैं । सिंचाई विभाग कहता है कि इन पेड़ों के बदले हम इतने ही पेड़ आपको दे देंगे । लेकिन वन विभाग कहता है कि पेड़ कट नहीं सकते हैं । पेड़ काटने के लिए नहीं होते हैं । इस टेक्नीकल दिक्कत के कारण पिछले डेढ़ साल से यह काम रुका हुआ है । वर्ल्ड बैंक ने कहा है कि अगर आप साल भर के अन्दर इसको नहीं करते हैं तो हम अपना पैसा वापस ले लेंगे । मैं आपके माध्यम से केंद्रीय सरकार से और खास तौर से वन विभाग से या जो भी मंत्रालय इस काम को कर रहा है उनसे कहना चाहता हूं कि टिहरी के लिए जो भी विभाग फाइनेन्स का इंतजाम कर रहा है उनको यह देखना चाहिए कि साल दो साल में अगर इस डैम का काम पूरा नहीं होता है तो चीजों के दामों में इतना ऐस्कलेशन हो रहा है कि फिर इसको बनाने में और अधिक दिक्कतें

[श्री सत्यपाल मलिक]

आएंगे और गंगा के जरिये से यह विनाश होता रहेगा । इसलिए मैं आपके माध्यम से केन्द्रीय सरकार से फिर यह दर्खास्त करना चाहता हूं कि टिहरी बांध का निर्माण तत्काल कराया जाय और जो नई गंगा नहर की खुदाई होनी है, इस काम को जल्दी से जल्दी पूरा किया जाय ।

REFERENCE TO THE REPORTED USE OF A GUEST HOUSE OF A PUBLIC SECTOR COMPANY BY GNLF PRESIDENT

SHRI GURUDAS DAS GUPTA (West Bengal): Mr. Chairman, Sir, I had been to Darjeeling last week. While moving through some parts of Darjeeling, I was told that the self-styled leader of the Gorkha Liberation Front, who is known as Subash Gheishing, has been using Central Government property as a place of his hide-out and as a place for holding meetings with his own political followers to chalk out the movements, to carry out the liberation as he calls it. When I was told by my friends and comrades, I had doubts whether it is so. But on return. I could find in the newspaper a photograph published wherein it is shown that Mr. Subash Gheishing is occupying a room in the guest house of Indian Oil Corporation in the heart of the city of Darjeeling. I do not know whether permission was given by the Chairman of the Indian Oil Corporation? (*Interruptions*).

SHRI VISHVAJIT PRITHVIJIT SINGH (Maharashtra): When was the photograph taken?

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: This is the photograph. (*Interruptions*) Sir, I shall read out a caption. I am not a photographer. Mr. Chairman, Sir, I seek your protection. (*Interruptions*).

SHRI DIPEN GHOSH (West Bengal): Mr. Chairman, Sir, after denying that Mr. Gheishing did not occupy an accommodation in the I.O.C. Guest House, as alleged by him, even if they deny, it proves that they have got involvement with them.

SHRI JAGESH DESAI (Maharashtra): No, we want to know the facts. (*Interruptions*).

MR. CHAIRMAN: Merely occupying an accommodation is not an offence. But what Mr. Gurudas Das Gupta was saying is: he was using it for nefarious purposes. That must be looked into. (*Interruptions*).

SHRI DIPEN GHOSH: Why do you make noise?

SHRI GURUDAS DAS GUPTA: Mr. Chairman, Sir, since I have been given the floor, I should have the freedom to defend myself and the Members of the House, instead of creating troubles, should listen to such a serious complaint. It would rather display a sense of wisdom rather than of arrogance and in attitude not to show any credence to the complaints that the hon. Members are likely to raise in the Parliament. Sir, I quote, and it is published in the TELEGRAPH dated 5th August, 1986. I read out the caption. I am neither a photographer, nor a reporter nor do I belong to the Central Intelligence of the Government of India nor do I happen to be a member of the Intelligence that any political party may be having because it seems that are posted with so much of facts. Anyway, I am reading out:—

> "The GNLF President, Mr. Subash Gheishing, photographed at an Indian Oil Corporation Guest House in Darjeeling on Thursday. The photograph is taken on Tuesday, *i.e.* a few days before and it says categorically on Thursday night, just an hour before the police officially began searching for him. Mr. Gheishing continues to be 'underground'."
>
> *"Picture by Sandip Shankar."*

I hope this will be taken as evidence of a genuine photograph and